भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

उत्तर तालमेल कमेटी (NCC)

प्रेस रिलीज़

तारीख़: 15 सितंबर, 2026.

पार्टी के गठन की 23वीं स्थापना वर्षगांठ को सभी जगहों पर क्रांतिकारी जोश और उत्साह के साथ मनाएँ!!

विघटनकारी गद्दारों द्वारा हमारी पार्टी को खुली और कानूनी बनाने के सारे कुप्रयासों को विफल करें और मजबूत लेनिनवादी कार्यपद्धति का सख्ती से अनुशरण करेंगें!!

धक्का खाए छापामार जोनों व छापामार आधारों को विकसित करने के लिए तीन जादुई हथियारों पार्टी, जनसेना और सयुंक्त मोर्चा को मजबूत करेंगें!!

एकता कांग्रेस-नौवी कांग्रेस में निर्धारित पार्टी लाइन पर किए जा रहे सभी हमलों को परास्त करेंगें और नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने के लिए व्यापक जनता को संगठित करेंगें!!

प्यारे कामरेडों एवं जनता,

हमारी पार्टी के गठन की 23वीं स्थापना वर्षगांठ की खुशी के इस मौके पर हम सभी साथियों और मेहनतकश जनता को अपनी क्रांतिकारी शुभकामनाएं पेश करते हैं। हम उन तमाम साथियों और जनता को लाल सलाम पेश करते हैं, जो हरेक मुश्किल हालात में निडरता से पार्टी के साथ न केवल खड़े रहे बल्कि पार्टी को विघटित करने के सारे प्रयासों को विफल करते हुए क्रांतिकारी आंदोलन में अमूल्य योगदान निभा रहे हैं. हम सूरजकुंड नीति के रूप में फासीवादी हमलों के खिलाफ लड़ते हुए आगे की राह बनाने के क्रम में हैं। इस महान ऐतिहासिक दिन पर, हमें उन सभी अमर शहीदों को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिन्होंने इस नई राह पर चलते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए और जिन्होंने पार्टी निर्माण की प्रक्रिया में शहादत दी। विशेष रूप से हमारे उन सभी केंद्रीय कमेटी के साथियों और पीएलजीए के बहादुर साथियों और सैनिकों को जिन्होंने हमारे देश में नवजनवादी क्रांति (NDR) के मार्ग को आलोकित करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। हमारी पार्टी के संस्थापक सदस्य कॉमरेड चारु मजूमदार और कॉमरेड कन्हाई चटर्जी, कॉमरेड श्याम, कॉमरेड मुरली, कॉमरेड महेश, कॉमरेड शमशेर सिंह, कॉमरेड बसवाराजु, कॉमरेड किशन दा, कॉमरेड राजू दा, कॉमरेड कोसा दा, कॉमरेड विवेक दा, कॉमरेड चलपति, कॉमरेड हिड़मा और अन्य शहीद

हमें हमारे देश में नवजनवादी क्रांति के इस महान कार्य को पूरा करने के लिए हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहेंगे। इन महान अमर कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों ने यह साबित कर दिया है कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद (MLM) की विचारधारा के प्रति समर्पण हमें दुनिया की मेहनतकश जनता के लिए चमत्कार करने की ओर ले जा सकता है। साथियों, आइए हम संकल्प लें कि पार्टी की राजनीतिक लाइन पर अडिग रहकर हम जीवन भर पार्टी के एक सच्चे सिपाही बने रहेंगे।

इसके साथ ही, उसी भावना और दृढ़ संकल्प के साथ हम अवसरवादी-विघटनवादी-संशोधनवादी वेणुगोपाल, देवजी, बलराज उर्फ बच्चा प्रसाद सिंह, दर्शन पाल, अर्जुन प्रसाद सिंह, हरमनप्रीत, गोपाल मिश्रा, प्रशांत राही, राजू उर्फ केपी, सीमा-विश्वविजय और अन्य क्रांति के उन गद्दारों के प्रति अपनी तीव्र घृणा व्यक्त करते हैं। हम ऐसी गद्दार प्रवृत्तियों और लाइनों के खिलाफ आखिरी सांस तक संघर्ष करने की शपथ लेते हैं ताकि हम अपने वर्तमान समय के केंद्रीय कार्यभार की ओर आगे बढ़ सकें, जो कि पार्टी, पीएलजीए और सयुंक्त मोर्चा को बचाना है; धक्का खाए छापामार जोनों और छापामार आधार क्षेत्रों (GB) का पुनरुद्धार; देश के विभिन्न क्षेत्रों में पार्टी, पीएलजीए और सयुंक्त मोर्चा का निर्माण करना ताकि छापामार युद्ध को आगे बढ़ाया और विकसित किया जा सके; और स्वतःस्फूर्त जन आंदोलनों में भागीदारी करना ताकि उन्हें संगठित आंदोलनों में बदलने के लिए पार्टी, पीएलजीए और सयुंक्त मोर्चा का निर्माण करना। याद रखें, पार्टी बचाने के काम का अर्थ है उन विघटनवादियों (liquidators) के खिलाफ संघर्ष करना, जो इसे खुला और कानूनी बनाना चाहते हैं, जो लेनिन के प्रकार की कम्युनिस्ट पार्टी कहलाने योग्य पार्टी को नष्ट करने के बराबर है।

नक्सलबाड़ी भारत में कम्युनिस्ट आंदोलन के इतिहास में ऐतिहासिक दौर था। यह सामंतवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ भूमिहीनों और मजदूर वर्ग के अंतर्निहित क्रोध को चित्रित करने के अलावा भी ऐतिहासिक रहा क्योंकि इसने आधुनिक संशोधनवाद और वास्तविक कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के बीच एक स्पष्ट विभाजन रेखा खींचने का काम किया था। कामरेड चारू मजूमदार ने स्पष्ट रूप से नक्सलबाड़ी के महत्व को चिह्नित करते हुए कहा कि "नक्सलबाड़ी ने रणदिवे, नंबूदरीपाद, सुंदरय्या एंड कंपनी के नेतृत्व वाले नव-संशोधनवादी गुट का मुखौटा भी उतार फैंका है और इसके विनाश का कारण बना दिया है। डांगेपंथियों जैसे इन नव-संशोधनवादी नेताओं की विश्वासघाती प्रवृत्ति की कोई सीमा नहीं है। जब लंबे समय से विलंबित सामाजिक क्रांति उभर रही है, तब वे प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों के अंतिम आरक्षित दस्ते के रूप में काम कर रहे हैं, जो अब गहराते आर्थिक और राजनीतिक संकट के जाल में फँस चुके हैं। वामपंथी शब्दावली का आवरण ओढ़कर अपने वास्तविक इरादों को छिपाते हुए, उन्होंने मार्क्सवाद को त्याग दिया है और पुराने घृणित शासन की रक्षा के लिए आगे आ गए हैं। लेकिन क्रांतिकारी शक्तियाँ निस्संदेह उन्हें इतिहास के कूड़ेदान में फेंक देंगी और जनवादी जनतंत्र तथा समाजवाद की दिशा में आगे बढ़ेंगी।" हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) आधुनिक संशोधनवादी और कम्युनिस्ट शक्तियों के बीच ऐसे स्पष्ट विभाजन की प्रक्रिया से बनी है। 21 सितंबर 2004 को इसके गठन से लेकर अब तक, हमारी पार्टी ने कर्नाटक अल्पसंख्यक समूह से लेकर सीमा-विश्वविजय तक अवसरवादी-विघटनवादी-संशोधनवादियों के विरुद्ध अडिग और समझौताहीन संघर्ष चलाया है। कॉमरेड कन्हाई चटर्जी ने कहा था कि "केवल अवसरवादियों को बेनकाब करने की प्रक्रिया में ही ठोस व्यवहार पर आधारित सच्ची एकता का निर्माण किया जा सकता है।" भारत की क्रांति की दो महान धाराओं—भाकपा (माले) पीपुल्स वार और एमसीसीआई—के विलय में यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई दी। यह विलय सभी रंगों और रूपों वाली अवसरवादी-संशोधनवादी शक्तियों को बेनकाब करने तथा उनके विरुद्ध संघर्ष करने के लिए, क्रांतिकारी शिविरों के भीतर और बाहर, सच्ची कम्युनिस्ट शक्तियों की एकता का एक प्रचंड आह्वान था। वर्तमान में भी हमारी पार्टी के संस्थापक सदस्य कॉमरेड चारु मजूमदार और कन्हाई चटर्जी से सीख लेकर हम अवसरवाद-विघटनवाद-संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष करने में जुटे हुए हैं.

21 सितंबर का ऐतिहासिक दिन मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद और आधुनिक संशोधनवाद के बीच साफ और स्पष्ट विभाजन का प्रतीक है। विलय की घोषणा के तुरंत बाद 2007 में पार्टी की नौवीं कांग्रेस—एकता कांग्रेस—आयोजित की गई। यह कांग्रेस 2004 में घोषित एकता का राजनीतिक-वैचारिक सुदृढ़ीकरण थी। कहा जा सकता है कि नौवीं कांग्रेस—एकता कांग्रेस—की राजनीतिक लाइन उन दो धाराओं के बीच दृढ़ संगठनात्मक एकता पर आधारित थी, जिसके परिणामस्वरूप एक नई पार्टी, अर्थात्

भाकपा (माओवादी) का गठन हुआ। आज वेणुगोपाल, देवजी और सीमा-विश्वविजय आदि के रूप में मौजूद विघटनवादी पार्टी की एकता के विरुद्ध खड़े हैं। वे चाहते हैं कि इस देश की जनता को उस दौर में वापस घसीट दिया जाए, जब कोई एकीकृत पार्टी नहीं थी और सर्वहारा वर्ग का भविष्य अंधकारमय था। वे क्रांतिकारी मार्ग के सवाल पर स्पष्टता नहीं चाहते। वे उस राजनीतिक स्पष्टता और दृढ़ता के विरुद्ध हैं, जिसे सर्वहारा वर्ग ने अपने समय के आधुनिक संशोधनवादियों के खिलाफ दृढ़तापूर्वक संघर्ष करते हुए हासिल किया है।

इसलिए, हमारे समय के विघटनवादियों के लिए सबसे घृणित वे दस्तावेज़ हैं जिन्हें 2007 में हमारी पार्टी की कांग्रेस ने पारित किया था। इन दस्तावेज़ों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद संबंधी दस्तावेज़, पार्टी संविधान, पार्टी कार्यक्रम, राजनीतिक प्रस्ताव तथा रणनीति और कार्यनीति शामिल हैं। किसी भी पार्टी सदस्य द्वारा 2007 की एकता कांग्रेस-नौवीं कांग्रेस में पारित पार्टी लाइन के विपरित अपनी अलग समझदारी को अपने ढाँचे के अलावा किसी दूसरे ढ़ाँचे के साथियों के साथ, हमदर्दों और जनता में रखना जनवादी केंद्रीयता का उलंघन है. ये तरीका अवसरवादी अपने पार्टी विरोधी कार्यों को पूरा करने के लिए इस्तेमाल करते हैं.

अब हम देखते हैं कि 21 सितंबर में ऐसा क्या है, जिसके विरुद्ध विघटनवादी सबसे अधिक मुखर होकर प्रचार कर रहे हैं:

1. 21 सितंबर 2004 को एकता के बाद पारित पार्टी के संविधान में कहा गया है कि नवजनवादी क्रांति (NDR) के पूरा होने तक पार्टी भूमिगत रहेगी। यह विघटनवादियों के इस दावे के बिल्कुल विपरीत है कि पार्टी को खुले रूप में काम करना चाहिए। सभी विघटनवादी इस बुनियादी लेनिनवादी लाइन के विरुद्ध हैं।

2. 21 सितंबर 2004 को एकता के बाद पारित पार्टी के संविधान में कहा गया है कि नवजनवादी क्रांति के दौरान सशस्त्र संघर्ष संघर्ष का मुख्य रूप और सेना संगठन का मुख्य रूप बनी रहेगी। इसलिए सशस्त्र संघर्ष निर्णायक भूमिका निभाएगा। जनसंगठन और जनसंघर्ष आवश्यक और अनिवार्य हैं, लेकिन उनका उद्देश्य युद्ध की सेवा करना है। पार्टी का तत्काल और सबसे जरूरी कार्य गुरिल्ला क्षेत्रों और गुरिल्ला आधारों को विकसित तथा रूपांतरित करते हुए पूर्ण विकसित जन मुक्ति सेना (PLA) और आधार क्षेत्रों की स्थापना करना है। वेणुगोपाल और देवजी की विघटनवादी लाइन पार्टी की राजनीतिक लाइन पर हमला है। इसके बजाय वे दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन को आम बगावत की लाइन के साथ मिलाने का सुझाव दे रहे हैं।

3. 21 सितंबर 2004 को एकता के बाद पारित पार्टी के संविधान में आगे कहा गया है कि प्रत्येक पार्टी सदस्य पार्टी की किसी-न-किसी इकाई का सदस्य होगा। हमारे अनेक विघटनवादी इससे नाराज़ हैं; वे सोचते हैं कि उनका व्यक्तित्व इतना बड़ा है कि उन्हें पार्टी ढ़ाँचे में किसी इकाई के अधीन काम नहीं करना चाहिए। इस प्रकार के विघटनवादियों का एक उपयुक्त उदाहरण सीमा और विश्वविजय हैं।

4. 21 सितंबर 2004 को एकता के बाद पारित पार्टी के कार्यक्रम में कहा गया है कि सामंतवाद और व्यापक जनता के बीच का अंतर्विरोध प्रधान अंतर्विरोध है, जबकि प्रमुख अंतर्विरोध साम्राज्यवाद और भारतीय जनता के बीच तथा सामंतवाद और व्यापक जनता के बीच के अंतर्विरोध हैं। इसके विपरीत, नौवीं कांग्रेस—एकता कांग्रेस—के विघटनवादियों के लिए दलाल नौकरशाह पूंजीपति (CBB) का अंतर्विरोध हावी और प्रधान अंतर्विरोध है। यही सीपीएम की लाइन थी, जिसके विरुद्ध हमारे संस्थापक कॉमरेड सीएम और केसी ने संघर्ष किया था। इसी संघर्ष के परिणामस्वरूप 21 सितंबर के ऐतिहासिक विलय के बाद पार्टी के बुनियादी दस्तावेज़ों को पारित किया गया।

5. राजू, दर्शन पाल, जोगिंदर सिंह और हरमनप्रीत जैसे अनेक विघटनवादी मानते हैं कि भारत के कुछ क्षेत्रों, जैसे पंजाब और हरियाणा में उत्पादन संबंधों में पूंजीवाद मौजूद है; इसलिए इन क्षेत्रों में दीर्घकालीन जनयुद्ध नहीं चलाया जाएगा और यहाँ पार्टी खुले तथा कानूनी रूप से काम करेगी।

यह 21 सितंबर 2004 को पार्टी के गठन के बाद नौवीं कांग्रेस में पारित रणनीति और कार्यनीति के दस्तावेज़ के बिल्कुल विपरीत है। उस दस्तावेज़ में कहा गया है कि यह सच है कि पंजाब और हरियाणा के जमींदारों का एक वर्ग उत्पादन के आधुनिक साधनों का स्वामी है, खेत मजदूरों को काम पर रखता है, खेती की निगरानी करता है, बाजार के लिए उत्पादन करता है और अधिशेष के एक हिस्से को कृषि में पुनर्निवेश करता है। जमींदारों का यह वर्ग कृषि में पूंजीवाद का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन यह पूंजीवाद विकृत रूप वाला है। यह सामंती मूल्यों को बनाए रखने में सहायक है, साम्राज्यवादी शोषण को और गहरा करने के लिए अर्थव्यवस्था के स्वतंत्र और स्वायत्त विकास को बाधित करता है तथा लोकतंत्र और देश के हितों का विरोध करता है। अधिकांश पूर्व राजाओं की तरह अनेक बड़े जमींदार भी दलाल औद्योगिक पूंजीपति हैं।

प्यारे कामरेडों के लिए अपील,

इस ऐतिहासिक दिवस पर हम सभी पार्टी सदस्यों से अपील करते हैं कि वे 21 सितंबर के दिन को अपने-2 जगहों पर क्रांतिकारी परंपरा मुताबिक बड़े उत्साह के साथ मनाएँ और पार्टी बचाने और क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए सभी पार्टी सदस्यों को तात्कालिक रूप से इन बिंदुओं पर ध्यान देते हुए आगामी कार्ययोजना बनानी चाहिए:

1. जिन पार्टी सदस्यों का पार्टी नेतृत्व के साथ तालमेल टूटा हुआ है, उन्हे फौरन पार्टी नेतृत्व के साथ तालमेल कायम करने पर ध्यान देना चाहिए. पार्टी कमेटी के साथ तालमेल कायम कर पार्टी नेतृत्व के मार्गदर्शन में कामकाज को आगे बढ़ाएँ.
2. अवसरवाद-विघटनवाद-संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष तेज़ कर ज्यादा से ज्यादा भूमिगत कार्यकर्ताओं को तैयार करने के लिए सक्रिय वैचारिक संघर्ष चलाएँ.
3. भूमिगत कार्यपद्धति को लागू करने में सख़्ती बरतनी होगी. भूमिगत कार्यपद्धति में किसी भी प्रकार की लापरवाही बरतना न केवल राजकीय दमन को बुलावा देना है, बल्कि पार्टी के विनाश को बुलावा देना होगा.
4. भारतीय राज के खिलाफ व्यापक जनसमुदाय के स्वत: सफूर्त आंदोलनों को संगठित आंदोलन में तब्दील करने के लिए जनसमुदाय के साथ गहरा नाता कायम करना होगा.

प्यारी जनता के लिए अपील:

विश्व सर्वहारा वर्ग के लिए इस ऐतिहासिक दिवस पर हम देश की जनता से अपील करते हैं कि वे 21 सितंबर के दिन को बड़े उत्साह के साथ मनाएँ और हमारे विघटनवादी तत्वों के विरुद्ध जारी राजनीतिक-वैचारिक संघर्ष में भाग लें। उन्हें हमारी पार्टी द्वारा प्रस्तुत तथ्यों और दावों की स्वयं जाँच करनी चाहिए। उन्हें हमारे सभी लेखों और प्रेस विज्ञप्तियों को बारीकी से पढ़ने का प्रयास करना चाहिए। यह बहस भारतीय क्रांति की दिशा तय करेगी और भारतीय जनता के भविष्य का निर्णय करेगी। यदि पार्टी पार्टी के रूप में बनी रहती है, तो वह आदिवासियों को कार्पोरेट घरानों की लूट से बचा सकती है, दलितों को जातिगत अत्याचारों से सुरक्षा दे सकती है, महिलाओं को ब्राह्मणवादी सामंती पितृसत्ता से बचा सकती है और सबसे बढ़कर, ज़मींदारों, मिल-मालिकों, ठेकेदारों, माफियाओं, भ्रष्ट नौकरशाहों आदि के विरुद्ध मज़दूर वर्ग के लड़ाकु संघर्ष में उसकी सहायता कर सकती है। इसलिए हम इस देश की जनता से अपील करते हैं कि वे पार्टी को बनाए रखने के महत्व को समझें और इसे बचाने के लिए आगे आएँ। इसके अलावा, हम विभिन्न पेशों से जुड़े बुद्धिजीवियों, वकीलों और लोकतांत्रिक शक्तियों से भी अपील करते हैं कि वे देश की विभिन्न

जेलों में बंद राजनीतिक कैदियों को उनकी कानूनी लड़ाई तथा जेल में जीवित रहने के संघर्ष में सहायता देने के हमारे प्रयासों में सहयोग करें। हम सभी लोकतांत्रिक शक्तियों से यह भी अपील करते हैं कि वे माओवादी क्रांतिकारियों पर होने वाली यातना और गैर-न्यायिक हत्याओं के विरुद्ध एकजुट हों तथा कॉमरेड प्रमोद मिश्रा, कॉमरेड सागर दा, कॉमरेड शीला दी, कॉमरेड किशोर दा, कॉमरेड दीपक राव आदि कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों की तत्काल रिहाई की माँग करें।

जारीकर्ता:
उत्तर तालमेल कमेटी
भाकपा (माओवादी)